

महात्मा बसवेश्वर के सामाजिक विचार

डॉ. उत्तम बालु वाघमोडे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज

Article Info

Article History:

Received: 20th February 2026

Accepted: 01st March 2026

Published: 07th March 2026

Keywords:

महात्मा बसवेश्वर

ABSTRACT

महात्मा बसवेश्वर का जन्म १९३९ ई. में कर्नाटक के उत्तरी भाग में स्थित बसवाना, बगेवाड़ी शहर में माधवरासा में मदालाम्बिके के घर में हुआ था। वह कन्नड़ रुढ़िवादी ब्राह्मण परिवार के अनुयायी थे। बसवेश्वर भारतीय दार्शनिक शिवभक्त के थे। बसवेश्वर शिव के प्रति समर्पित थे। उनका नाम भी शिव के वाहन नंदी के नाम से ही प्रेरित है जो संस्कृत के वृषभ का कन्नड़ रूप है नंदी बैल। शिव के वाहन और स्थानीय शैव परंपरा से प्रेरित होकर उनका नाम बसवा रखा गया। आज भी बसवेश्वर को स्थानीय साहित्यकार वहा के साहित्य में उनके नाम का उल्लेख बसवा ही करते हैं।

Plagiarism Check Report:

Date of Report: March 01, 2026

Similarity Index: 7%

Remarks: No significant matching text. All citations and matches are properly referenced. The manuscript is considered original.

Copyright © 2026 The Author(s). This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License, (<http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

How to Cite: Waghmode, Uttam Balu. (2025). महात्मा बसवेश्वर के सामाजिक विचार. *IIP: World Journal of Humanities and Social Sciences (IIPWJHSS)*, 2(1), 458-460.

महात्मा बसवेश्वर का जन्म ११३१ ई. में कर्नाटक के उत्तरी भाग में स्थित बसवाना, बगेवाड़ी शहर में माधवरासा में मदालाम्बिके के घर में हुआ था। वह कन्नड़ रुढ़िवादी ब्राह्मण परिवार के अनुयायी थे। बसवेश्वर भारतीय दार्शनिक शिवभक्त के थे। बसवेश्वर शिव के प्रति समर्पित थे। उनका नाम भी शिव के वाहन नंदी के नाम से ही प्रेरित है जो संस्कृत के वृषभ का कन्नड़ रूप है नंदी बैल। शिव के वाहन और स्थानीय शैव परंपरा से प्रेरित होकर उनका नाम बसवा रखा गया। आज भी बसवेश्वर को स्थानीय साहित्यकार वहा के साहित्य में उनके नाम का उल्लेख बसवा ही करते हैं।

बसवा का पालन-पोषण एक शैव परिवार में हुआ। एक नेता के रूप में, उन्होंने वीरशैव नामक एक नए भक्ति आंदोलन को विकसित और प्रेरित किया, जिसका अर्थ है "शिव के उत्साही, वीर उपासक"। इस आंदोलन की जड़ें 7वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान चल रहे तमिल भक्ती आंदोलन, विशेष रूप से शैव नयनार परंपराओं में थीं। हालांकि, बसवा ने ऐसी भक्ति का समर्थन किया जिसने ब्राह्मणों द्वारा संचालित मंदिर पूजा और अनुष्ठानों को अस्वीकार कर दिया और इसे शिव की व्यक्तिगत प्रत्यक्ष पूजा से बदल दिया, जिसमें व्यक्तिगत रूप से धारण की जाने वाली मूर्तियाँ और छोटे लिंग जैसे प्रतीक शामिल थे। इस दृष्टिकोण ने शिव की उपस्थिति को लिंग, वर्ग या जाति के भेदभाव के बिना, सभी के लिए और हर समय सुलभ बना दिया। बसवा की कविताएँ, जैसे बसवन्ना 703, लैंगिक समानता और सामुदायिक बंधन की प्रबल भावना को दर्शाती हैं।

महात्मा बसवेश्वर उत्तर पश्चिम कर्नाटक में कृष्णा नदी की सहायक नदी मालप्रभा के तट के पास पले बड़े थे। उनका बचपन ग्रामीण परिवेश में गुजरा था इसीलिए ग्रामीण परिवेश से वह पूरी तरह वाकिब थे। बसवा बचपन से ही परंपरागत चली आयी रुढ़ियों का विरोध करते आए हैं। उसका उदहारण हम उनके शादी के समय हुए किस्से में देख सकते हैं कि जब “बसवा की मुंज की रस्म करने के लिए उनके मामा बलदेव आते हैं, तब बसवा उनके सामने ही मुंज की रस्म करने से इंकार कर देते हैं।”^१ एक ओर समाज जातिव्यवस्था में बंदिस्त था जिसमें ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वैश्य और शुद्र इन चार भागों में समाज विभाजित हुआ था। उसमें भी अलग-अलग प्रकार की विभिन्न उपजातियाँ सम्मिलित थीं। भौगोलिक स्थिति का समाज पर गहरा असर पड़ा था। गरीब-आमिर, प्रजा-राजा, स्पृश्य-अस्पृश्य प्रकार के भेद थे। उन सभी भेदभावों को दरकिनार कर बसवेश्वर ने समाज की उससे उभरने की सिख दी और उसकी शुरुआत उन्होंने खुद की। बसवा बचपन से ही समाज की निस्वार्थ सेवा करते रहे। उसी का फलस्वरूप उनके मामा बलदेव अपनी कन्या गंगाबिका का था बसवेश्वर के हात में देकर उन्हें अपने गाँव मंगलवेडा लेकर आते हैं और उन्हें अपने राजा से कहकर कोषागार बनाते हैं। वहा आने के बाद बसवेश्वर की ईमानदारी देखकर बिज्जल के राजा की मानी हुई बहन निलांबिका से उनका दूसरा विवाह किया जाता है। तब से बसवेश्वर का सामाजिक प्रभाव अधिक रहा और वहाँ से ही बसवेश्वर को प्रसिद्धी मिली।

बसवेश्वर पूर्व काल में शैव संप्रदाय के अनेक प्रकार थे, उसके प्रवर्तक शिवलिंग पूजा पर विश्वास करते थे। उसमें गणेश पूजा, नंदी, लक्ष्मी, विष्णु, कुबेर, वीरभद्र आदि देवताओं की उपासना की जाती थी। कहीं-कहीं भक्त घर से या गाँव से बाहर जाते समय अपने भगवान फोटो या शिवलिंग साथ रखते थे ताकि अपने अराध्य की सेवा में खंड ना पड़े। शिवभक्त कापालिक शैव, अघोरपंथी और शाक्तपंथी लोग नरबली देकर भगवान को खुश करने कार्य करते थे, साथ ही मांस खाना, गाँजा फुकना, गर्लें में नरों की शिरों की माला पहनना, जलहुयी चिता की राख अपने अंग पर लगाना, बिना कपड़ों के रहना, बालों को पढ़ाना आदि प्रकार करके शिवभक्त होने का प्रमाण देते थे। उसके साथ ही समाज में ब्राह्मणों और पुरोहितों द्वारा लोगोंको स्वर्ग-नरक का दर उनके अंदर बिठाकर राजा और आमिर लोगों से मंदिर बनाए जाते थे उसमें गरबों को डरा कर यज्ञ, होमहवन, ग्रहशान्ति, बकरे और मुर्गोंकी बलि देना आदि प्रकार से लोगों को डराकर पुरोहित लोग अपनी आमदनी चला रहे थे। उस समय शुद्र, किसान, गरीब, स्त्रियाँ आदि को मंदिर में परवेश भी करने नहीं देते ते तब बसवेश्वर कहते हैं “सधन बांधिती गोपुरे मंदिर। देवा! मी गरीब करू काय? देहची असे देवालय।”^२ इस पंक्ति के माध्यम से बसवा समाज के गरीब, शोषित, किसान और स्त्रियों को यह संदेश देते हैं कि हमारा शरीर ही ही मंदिर है हमें उससे प्रेम करना चाहिए उसकी पूजा करनी चाहिए।

महात्मा बसवेश्वर शिव के अनुयायी होने के कारण उनके गलेमें शिव के लिंग प्रतीक वाली माला पहनते थे। “उनके गले में रुद्राक्ष की माला और विभूति (माथे पर लगाई जाने वाली पवित्र राख) आस्था के सिद्धांतों की याद दिलाने वाले अन्य प्रतीक हैं।”^३ बसवा ने सिखाया कि जाति-भेदभाव किए बिना प्रत्येक मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है, और सभी प्रकार के शारीरिक श्रम समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। समुदाय के दृष्टिकोण में, सच्चे संत और शैव भक्त का निर्धारण केवल जन्म से नहीं बल्कि आचरण से होता था। उनकी कविताओं और विचारों में बार-बार आने वाला विरोधाभास स्थावरा और जंगमा का है, अर्थात् “जो स्थिर है, खड़ा है” और “जो गतिशील है, खोज रहा है”^४ मंदिर, प्राचीन पुस्तकें पूर्व का प्रतिनिधित्व करते थे, जबकि काम और चर्चा बाद वाले का प्रतिनिधित्व करते थे।^५ महात्मा बसवेश्वर जी ने समाज में फैली अंधश्रद्धा से हमेशा समाज को अवगत करने का काम किया है। जातिव्यवस्था में जकड़े समाज अनेक प्रकार की अंधश्रद्धाएँ थी जैसे- बलि प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, मुंज, भुत-पिशाच आदि प्रकार की अंधश्रद्धाएँ फैली हुयी थी, जिनसे समाज को जाग्रत करने का काम बसवेश्वर जी ने किया है। महात्मा बसवेश्वर सामाज

सुधार के लिए हमेशा आगे रहे है।

राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में, बसवा ने शैव धर्म के पुनरुद्धार पर केंद्रित सामाजिक सुधारों और धार्मिक आंदोलनों को शुरू करने के लिए राज्य के खजाने का उपयोग किया, और जंगम कहलाने वाले तपस्वियों को मान्यता और सशक्त बनाया। 12वीं शताब्दी में उनके द्वारा शुरू की गई नवोन्मेषी संस्थाओं में से एक अनुभव मंडप था, जो एक सार्वजनिक सभा और सम्मेलन था, जिसमें दूर-दराज के क्षेत्रों से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के पुरुष और महिलाएं आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर खुलकर चर्चा करने के लिए आते थे। उन्होंने स्थानीय भाषा में कविताएँ रचीं और अपना संदेश जनता तक पहुँचाया। उनकी शिक्षाएँ और कायकवे कैलाश (कर्म कैलाश (आनंद, स्वर्ग) का मार्ग है, या कर्म ही उपासना है) जैसे श्लोक लोकप्रिय हुए।”⁴

अलग-अलग विद्वानों का कहना है कि बसवेश्वर के बारे में कविताएँ और किंवदंतियाँ उनकी मृत्यु के बहुत बाद लिखी गईं। इससे उन लेखकों द्वारा सटीकता और रचनात्मक प्रक्षेप के बारे में प्रश्न उठते हैं जो प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी रचनाएँ स्मृति, किंवदंतियों और दूसरों की सुनी-सुनाई बातों पर आधारित की है। इस प्रकार के मत हमें देखने मिलते हैं। लेकिन बसवेश्वर की की जो सामाजिक भावनाएँ हमें उनके सभी कविताओं में दिखाई देती है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि महात्मा बसवेश्वर एक समाज सुधार के रूप में हमारे सामने आते हैं, खुद ब्राह्मण होकर उनके देवताओं का विरोध किया हुआ दिखाई देता है। साथ ही शिव भक्ती के प्रति बसवेश्वर समर्पित दिखाई देते हैं। समाज में फैलाई गई अन्धश्रद्धा का महात्मा बसवेश्वर ने विरोध किया हुआ दिखाई देता है। समाज सती-प्रथा, बाल-विवाह, मुंज, बलि-प्रथा, किसान, गरीब, उच्च-निच आदि का बसवेश्वर ने खुलकर विरोध किया है। साथ ही जाती परंपराओं से ऊपर उठकर मनुष्य को मनुष्य मानना, अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहन देना। इस प्रकार के समाज सुधार के कार्य महात्मा बसवेश्वर ने अपने कार्यकाल में किए हुए दिखाई देते हैं।

संदर्भ

1. क्रांतिसूर्य: महात्मा बसवेश्वर (२०२३) – प्रा. डॉ. शिवशंकर उपासे – पृष्ठ २१
2. क्रान्तिकारी युग प्रवर्तक: महात्मा बसवेश्वर – डॉ. अशोक गं. मेनकुदले (महाराष्ट्र बसव परिषद् हिरेमठ संस्थान, भालकी जी-बीदर, कर्नाटक पृष्ठ - २०१
3. आर ब्लेक माइकल (1982), वीरशैव परंपरा में कर्म को उपासना के रूप में जर्नल ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलीजन, खंड 50, अंक 4, पृष्ठ 605-606
4. : एक विषयगत-ऐतिहासिक परिचय, रटगर्स यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 243-244
5. विकिमीडिया कॉमन्स पर बसवेश्वर से संबंधित मीडिया